International Journal of Information Movement Vol.5 Issue 2 (June 2020)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 13-21

स्वामी शिवानन्द का यौगिक व्यक्तित्व एवं समाज में योगदान

डॉ ईश्वर भारद्वाज
प्रोफेसर, योगविज्ञान विभाग,
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार,

मनीष सोलंकी
(शोधार्थी, योगविज्ञान विभाग,
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार,)

शोधसार

स्वामी शिवानन्द का जीवन चरित्र उनके समर्पण, कर्त्तव्य–कर्मों एवं उनकी सेवाओं, साधनाओं और कृतियों से दर्पण की भांति स्पष्ट होता है। एक चिकित्सक की भूमिका में उनके द्वारा की गयी सेवा उनके समाज कल्याण की भावना का प्रतीक है, जो हमारे लिए समाज सेवा के लिए प्रेरणा स्रोत है, जो हमें निष्काम भाव से कर्त्तव्य कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। उनकी यौगिक साधनाएं एवं कृतियां हमारे ज्ञान वर्द्धन एवं समाज के उत्थान हेतु विशेष योगदान दे रही हैं। स्वामी शिवानन्द ने सेवा के माध्यम से जन साधारण में सेवाभाव के प्रति भारत की प्राचीन परम्परा को जाग्रत कर उनमे सेवा, सदाचार, धर्म एवं परोपकार की भावनाओं का पुनः संचार किया तथा मनुष्य में चरित्रिक, समाजिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास करने का कार्य किया तथा अपनी कृतियों के माध्यम से चिन्तन के विविध आयामों का ज्ञान प्रस्तुत किया, जो हमारे ज्ञानवर्द्धन में अति सहायक सिद्ध हुआ।

1.0 स्वामी शिवानंद

स्वामी शिवानन्द का जन्म ताम्रपर्णी नदी के किनारे दक्षिण भारत में ठंडाई गांव में महान संत अभय दीक्षितार के वंश पी. एस. विंग वायर के घर में हुआ था। ''श्रीमती पार्वती अम्मा तथा श्री पी. एस. विंग अययर के तीसरे पुत्र के रूप में 8 सितंम्बर 1887 बृहस्पतिवार को बह्ममूहर्त सूर्य उदय के समय इनका जन्म हुआ। अभय दीक्षित दक्षिण भारत के एक महान संत थे तथा दक्षिण भारत के प्रसिद्ध लेखकों में इनकी गिनती की जाती है इन्होंने संस्कृत भाषा में 104 ग्रंथ लिखे इन ग्रंथों में उन्होंने ज्ञान के विभिन्न विषयों का प्रतिपादन किया।

माता श्रीमती पार्वती अम्मा ने अपने तीसरे पुत्र का नाम कुप्पूस्वामी रखा। इनके बड़े भाई श्री बीवी वीर राघव इटिया पुरम के राजा के व्यक्तिक सहायक थे तथा दूसरे भाई श्री टीवी शिवराम अययर पोस्ट ऑफिसों के निरीक्षक थे। इनके चाचा अप्पय शिवम संस्कृत भाषा के बहुत बड़े विद्यवान थे।

स्वामी जी बचपन से ही धार्मिक प्रवृति के तथा अत्यंत कुशल एवं तेज बुद्धि के बालक थे तथा दया, करूणा, निर्भयता, मिलनसार इत्यादि उनके स्वाभाविक गुण थे। गरीबों के प्रति दया भवना, पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम–भाव उनका स्वाभाविक गुण था। इनका लालन–पालन अत्यंत लड़–प्यार से हुआ था। श्रीमती प्रकाश अगवाल के शब्दों में बालक कुप्पूस्वामी बचपन से ही बड़े मेधावी और कुशाग्र बुद्धि के थे।

1.1 स्वामी शिवानन्द की शिक्षा

स्वामी की प्रांरभिक शिक्षा राजा हाई स्कूल इटिया पुरम में हुई, वहां उन्होने प्रत्येक कक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया, मैट्रिक पास करने के बाद उन्होंने तिरूचिरापल्ली के एस. पी. जी. कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की, जहां ये नाटकों और वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि में भाग लेते रहें तथा स्वामी कॉलेज में नाटक इत्यादि में अधिक रूचि रखते थे। 1905 में जब शेक्सपियर का मिडसमर नाइट्स ड्रीम नाटक खेला गया था तब इन्होने हेलेना का अभिनय किया था।

स्वामी जी ने चिकित्सा मार्ग को अपनाया, इसके लिए उन्होंने फर्स्ट–ऐड की परीक्षा देने के बाद चिकित्सा शास्त्र के अध्ययन हेतु तंजौर के मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लिया। तंजौर मेडिकल इंस्टिट्यूट मे पढ़ाई करते समय छुट्टियों में भी अपने घर नहीं जाते थे और अपना सारा समय अस्पताल में सेवा कार्यों मे ही लगा देते यहां तक कि उन्हे ऑपरेशन थिएटर में जाने की भी अनुमति प्राप्त थी। स्वामी जी स्कूल के समय से ही एक अत्याधिक श्रमशील व्यक्ति थे। वे अपने मेडिकल स्कूल के प्रथम वर्ष के अध्ययन के समय ही उन प्रश्नों का भी उत्तर दे देते थे जिनका अंतिम वर्ष के छात्र भी नहीं दे पाते थे। ऐसी अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे, उन्होने स्वयं इस तथ्य की पुष्टि की, प्रथम वर्ष में इन्होंने डॉक्टर तिरूमुडि स्वामी से ओस्लर्स मेडिसिन का ज्ञान प्राप्त किया। डॉक्टर ज्ञानम् इनकों संस्था का आभूषण बतलाते थे। छुट्टियों मे भी ये अस्पताल में रहते तथा बहुत से नए विषयों को सीखते थे।

2.0 मेडिकल प्रेक्टिस तथा पत्रिका का प्रकाशन :–

अपनी चिकित्सा शिक्षा पूर्ण करके स्वामी जी ने तिरूची में अपनी मेडिकल प्रैक्टिस प्रारम्भ कर दी तथा त्रिचनापल्ली में 3 वर्षो तक 'अब्रोसिया' नामक एक चिकित्सा पत्र चलाया। श्रीमती प्रकाश अग्रवाल के अनुसार, प्रैक्टिस के दिनों में ही उन्होंने चिकित्सा सम्बन्धि पत्रिका 'अब्रोसिसा' प्रारंभ की, जिसके प्राथमिक व्यय के लिए उन्हें अपनी माता से एक सौ रूपय प्राप्त हुए। उन दिनों में पत्रिका को निःशुल्क वितरीत करते थे ।उनको चंदा मांगने में संकोच होता था।

यह पत्रिका लगभग 4 वर्षों तक सफलतापूर्वक चलती रही इसके लिए लेख बहुत ही आकर्षक और चिकित्सकों के लिए उपयोगी होते थे। स्वामी जी इस पत्रिका को लेकर अत्याधिक उत्साहित रहते थे, स्वयं लेख लिखने के साथ–साथ आयुर्वेदाचार्य से भी वे इस पत्रिका के लिए लेख लिया करते थे। स्वामी जी लिखते है, दूसरी चिकितसा सम्बन्धित पत्रिकाओं से भिन्न इस पत्रिका का दृष्टिकोण पूरा कालीन विषयों के सिद्धान्तों पर ही आधारित था, क्योंकि युवावस्था से ही इनमें आध्यात्मिकता भरी हुई थी। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि आध्यात्मिकता का गुण स्वामीजी में प्रांरभ से ही था जिसका परिचय समय–समय पर मिलने वाले उनके जीवन की घटनाओं लिखा तथा कार्यो से से मिल जाता है।

3.0 कार्यक्षेत्र–चिकित्सीय क्षेत्र में योगदानः– :–

स्वामी जी ने अपनी मेडिसन प्रैक्टिस भारत में ही प्रांरभ कर दी थी किंतु वे अपनी पत्रिका को स्थाई बनाने के लिए अच्छी नौकरी करना चाहते थे। इसलिए उन्होनें चित्रनापल्ली को छोड़कर मद्रास में डॉक्टर हालर्स फार्मेसी में काम किया किंतु इससे भी स्वामी जी संतुष्ट नहीं थे वह और अच्छी स्थिति में कार्य करना चाहते थे और उन्होने मलाया जाने का मन बना लिया और वे मलाया चले गए, जो डॉक्टर के रूप में उनका मुख्य कार्यक्षेत्र रहा।

स्वामी जी इस विषय में बताते है ''मै अन्यत्र कहीं और अच्छी परिस्थिति को प्राप्त करने की खोज में था अंततः मैंने मलाया के स्टेटस सेटिलमेंट्स मे अपना भाग्य आजमाना चाहा, मैंने अपने मित्र डॉक्टर आयंगर को लिखा जिनका औषधालय कुछ वर्ष के लिए डॉक्टर हालर के निकट ही था तथा बाद में वें सिंगापुर में जाकर बस गए थे। उस समय एक ही रॉबिंस स्टेट के अस्पताल के लिए एक सहायक की खोज में थे। उन्होने स्वामी जी से पूछा–'' क्या तुम स्वयं भी एक अस्पताल चला सकते हो? उन्होंने उत्तर दिया ''हां मैं 3 अस्पताल चला सकता हूं।'' उन्होंने तत्काल ही स्वामी जी को काम पर रख लिया गया।

इस प्रकार स्वामी जी के कार्यक्षेत्र का विस्तार हुआ और यहां भी स्वामी जी ने अपने असाधारण व्यक्तिव का परिचय दिया। स्वामी जी अत्यंत मेहनती थे तथा उन्होंने समस्त कार्यभार अपने ऊपर ले लिया। स्वामी जी दिन–रात रोगियों की सेवा करते दवाइयों के स्टॉक को रखते तथा खर्चे का भी हिसाब रखते, परन्तु असाधारण बाधाओं के चलते स्वामी जी ने इस्तीफा दे दिया। स्वामी जी अत्यधिक सेवा–भाव से कार्य करते तथा प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान देते। स्वामी जी के इन्हीं सब गुणों के कारण मलाया में उनकी ख्याति दूर–दूर तक फैल गई और वे जनसाधारण मे अत्यधिक प्रसिद्ध हो गए जैसा कि स्वामी शिवांनद की पुस्तक साधना में स्वामी चिदानंद लिखते है, ''अध्ययनों उपरांत डॉ कुप्पूस्वामी ने समुद्र पार मलाया की यात्रा की जहां एक सुयोग्य और अद्भुत चिकित्सा के रूप में उनकी ख्याति चारों और फैल गई और एक अंतर्राष्ट्रीय सुख्याति प्राप्त चिकित्सक हुए। वे अपनी अपूर्व आध्यात्मिक तथा शुद्ध परोपकारी भावना के कारण एक प्रकार से जनता द्वारा पूजें जाने लगें थे।

यद्यपि स्वामी जी व्यवसाय से एक डॉक्टर थे, किंतु हृदय से वह एक सेवक थे और उनका अधिकांश समय सेवा सुश्रुशा में ही निकलना था। सदा दीन, दुःखीयों की सेवा करना उनका नित्य कर्म था। युवावस्था में उन्होंने अपना अधिकांश समय इसी कार्य में लगाया, लेकिन फिर भी उन्हांने अपनी नित्य पूजा, योगासन स्वाध्याय और भजन कीर्तन का मार्ग नहीं छोड़ा। श्रीमती प्रकाश अग्रवाल के शब्दों में मलाया में वह भजन कीर्तन भी करते थे और गीता, महाभारत, बाइबल, थियोसॉफिकल सोसायटी के साहित्य आदि का नित्य स्वाध्याय भी करते थे।

4.0 स्वामी शिवाननद की योग साधनाएं

आध्यात्मिकता उनके अंदर गहराई तक थी तथा सन्यास के प्रति उनका प्रेम अत्यंत परिपक्व था। अपना भोजन स्वयं पकाते थे और अतिथियों का सम्मान भी बड़े चाव से किया करते थे। मिलनसार उनकी एक प्रमुख चारित्रिक विषेशता थी। लोगों से अत्यन्त प्रेम–भाव से मिलते थे और उनका सम्मान किया करते थे। मलाया तो प्रलोभन की भूमि ही थी, परंतु इन्हें कुछ भी विचलित न कर सका। ये स्फटिक की भांति शुद्ध थे। नित्य पूजा, प्रार्थना तथा स्वाध्याय किया करते थे। मलाया में भी इन्होंने अनाहत नाद योग तथा स्वर साधना का अभ्यास किया।

क्योंकि स्वामी जी का मुख्य लक्ष्य स्थाई आनंद की खोज था। इसलिए मात्र डॉक्टर के व्यवसाय में वह कैसे आनन्द पा सकते थे, यह तो मात्र उनके आध्यात्मिक मार्ग को प्रशस्त करने का साधन मात्र था। यह उनके जीवन का एक पक्ष था। उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य तो कुछ और ही था। स्वंय इन्होंने अस्पताल में बहुत सेवकों को ट्रेनिंग दी तथा उनको बहुत से स्टेट अस्पतालों में भर्ती करा दिया। इन्होंने अपनी सारी शक्ति दिन–रात लोगों के दुःख दूर

करने में, रोगियों तथा गरीबों की सेवा करने में लगा दी। इस प्रकार की निष्काम सेवा से इनका मन तथा हृदय दोनों शुद्ध हो गए तथा अध्याात्मिक मार्ग की ओर प्रशस्त हो चला। इस प्रकार स्वामी के व्यवसायिक जीवन का रूपांतरण होने लगा और उनका रूझाान सन्यास की ओर बढ़ने लगा तथा वे आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर गए।

5.0 डॉक्टरी के व्यवसाय से सन्यास एवं योगमय जीवन का प्रारम्भः–

उन्होंने अपने अन्दर की आवाज को सुना तथा अपने विचारों को चिरत्रार्थ करने के लिए मलाया के अपने वैभवशाली व्यवायिक जीवन से त्यागपत्र देकर संन्यास लेने का निश्चय किया। अब उन्हें अपने जीवन का वास्तविक लक्ष्य समझ मे आ चुका था। अतः उन्होंने अर्थोपार्जन के व्यर्थ कार्य को छोडना ही उचित समझा। जीवन के वास्तविक अर्थ को समझते हुए जीवन के आराम तथा सुखों का परित्याग किया तथा प्रार्थना, ध्यान, स्वाध्याय तथा समस्त जगत की उच्चतर सेवा के लिए एक आदर्श केंद्र की खोज मे भारतवर्ष आ पहुंचे। 1923 में इन्होंने अर्थोपार्जन तथा विलासमय जीवन का परित्याग कर सन्यास–जीवन का ग्रहण कर लिया और सत्य का सच्चा अन्वेषक बन गयें तथा अपनी सारी सामग्री को अपने मित्र के पास मलाया मे ही छोड दिया।

6.0 योग गरू की प्राप्ति–

सबसे पहले वे वारणसी गए और वहां बाबा विश्वनाथ के दर्शन किए और फिर गुरू की खोज मे निकल पड़ें क्योंकि वे जानते थे कि बिन गुरू ज्ञान कहां से पाउं। अब गुरू की खोज ने उन्हें ऋषिकेश पहुंचा दिया और वहां उन्हें गुरू के रूप में परमहंस विश्वानंद सरस्वती मिलें तथा आचार्य गुरू श्री विष्णुदेवानंद जी ने उनके सन्यास का कार्य पूर्ण कराया। श्रीमती प्रकाश अग्रवाल इस विषय में लिखती है 8 मई 1924 को वह ऋषिकेश पहुंचे। जून 1924 को ऋषिकेश मे परमहंस स्वामी विश्वानंद सरस्वती का आगमन हुआ। डॉक्टर कुप्पू स्वामी ने उनमें अपने गुरू के दर्शन किए और स्वामी विश्वानंद जी ने उनमें अपने शिष्य को पहचाना। उन्होंने डॉक्टर को वहीं गंगा के तट पर सन्यास–दीक्षा दी। आचार्य गुरू श्री विष्णुदेवानन्द जी ने स्थानीय कैलाश आश्रम में उनके लिए विरजा होम किया। गुरू ने उनका नाम श्री स्वामी शिवानंद सरस्वती रखा और आशीर्वाद के साथ पर्याप्त आध्यात्मिक बन प्रदान किया।

7.0 सेवा तथा योग साधना–

स्वामी की साधना क्षेत्र मात्र जप और तप नहीं था अपितु साथ ही साथ अध्ययन भी उनकी साधना का एक मुख्य अंग था। उन्होंने अपनी साधना के लिए सर्वांगीण मार्ग का अनुसरण किया। वें लिखते है मैने ईश्वर कृपा की अनूभूति की अंतर से बल तथा प्रदर्षन प्राप्त किया। मैंने सर्वांगीण विकास का मार्ग ढूढ़ निकाला। मेरे जीवन का लक्ष्य है आत्म–साक्षात्कार। इसलिए उन्होंने अपनी सारी शक्ति और समय अध्ययन, सेवा तथा साधना मे लगा दिया।

सेवा उनकी साधना का प्रमुख अंग रही। नर सेवा नारायण सेवा मैं उनका पूर्ण विष्वास था वे साधुओं, महात्माओं तथा रोगियों की सेवा करते थे। बीमार–रोगियों की सेवा करना उनका नियमित कार्य था। वह रात रात भर जाग कर उनकी सेवा किया करते थे स्वयं भिक्षा मांग कर उनके लिए भी भोजन कर प्रबंध करते थे तथा साधनहीन लोगो को अस्पताल तक भी ले जाते थे। श्रीमती प्रकाश अग्रवाल के शब्दों मे वह बीमार व्यक्तियों को अन्य साधन न

होने पर अपनी पीठ पर लादकर ऋषिकेश के अस्पताल में भी ले जाते थे नर मे नारायण के दर्शन करने वाले श्री स्वामी को मानव सेवा में अपार सुख मिलता था।

एक सन्यासी का ऐसा सेवाभाव ऐसे तत्कालीन सन्यासीयों को समझ नहीं आता था, जो सेवा करने में नहीं अपितु सेवा करवाने में विश्वास रखते थे। समय–समय पर स्वामी जी को ऐसे सन्यासियों की अवहेलना झेलनी पड़ती थी और उनके विरोध का भी सामना करना पड़ा किंतु उनके व्यवहार में अपनी सेवा भाव को लेकर कोई परिवर्तन नहीं आया। निस्वार्थ सेवा करने के कारण यह विचित्र सन्यासी उन रूढ़ीवादी समसामयिक सन्यासियों की आलोचना का पात्र बना, जो अनासक्ति तथा पृथकत्व में विश्वास करते थे। किंतु उन सन्यासियों का यह आलोचना पूर्ण दृष्टिकोण स्वामी शिवानंद के योग के ऊपर अधिकार तथा आंतरिक आध्यात्मिक प्रकाश के आगे आदर युक्त श्रद्धा मे परिवर्तित हो गया।

सेवा उनकी साधना का एक अंग था किंतु अपने कठोर तप में भी वे कभी कोई कोताही नहीं बरतते थे। स्वर्ग आश्रम में रहकर उन्होंने नियम और संयम पूर्वक कठोर तप किया। ऋषिकेश का मौसम सदा परिवर्तनशील रहता है किंतु सर्दी गर्मी अथवा वर्षा ऋतु में भी समान रूप से कठिन तक करते थे शीत ऋतु में भी वे कठिन तक से कभी पीछे नहीं हटे। शारीरिक व्यायाम प्राणायाम आसन आदि का अभ्यास से शरीर को स्वस्थ और दृढ बनाने के लिए नियमित रूप से करते थे। श्रीमती प्रकाश अग्रवाल इस विशय में लिखती है कि अपनी व्यक्तिगत साधना में भी वे अडिग थे। शीत ऋतु में भी प्रातः गंगा जी के हिमानी जल में कमर तक खड़े होकर वह जब आरंभ करते है और सूर्योदय होने पर समाप्त करते वह ध्यान में प्रतिदिन 12 घंटो से अधिक समय तक करते थे। व्यर्थ की बातों में समय व्यतीत करना उन्हें पंसद नही था स्वाध्याय को लेकर वे सदैव जागरूक रहते थे। पुस्तकालय जाकर वहां से पुस्तक को लेकर पढ़ना उनकी दिनचर्या मे शामिल था। इनके माध्यम से अंतर निरीक्षण तथा आत्म विश्लेषण करने में स्वयं को सक्षम बनाते थे। परिणाम स्वरूप उनकी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र होने लगी।

8.0 जीवन का उद्देश्य तथा दिव्य जीवन संघ की स्थापना :–

स्वामी जी के जीवन का उद्देश्य मात्र आत्मा उन्नति नहीं था अपितु वृहद उद्देष्य के लिए आए थे उनका उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य की उन्नति था। वे चाहते थे कि प्रत्येक आध्यात्मिक जिज्ञासु को सही मार्गदर्शन मिले, ताकि वह अपने जीवन मे अपने परम लक्ष्य तक पहुंच सकें। वे भारत की प्राचीन परंपरा को जागृत कर उन्हें सेवा सदाचार धर्म और परोपकार की भावनाओ का पुनः संचार करना चाहते थे तथा मनुष्य में चारित्रिक तथा आध्यात्मिक गुणों का विकास करने के लिए निरंतर कार्य करते रहे अपने इसी वृहद ईश्वरीय कार्य के उद्देश्य के प्राप्ति के लिए उन्होंने दिव्य जीवन संघ की स्थापना की योजना बनाई तथा सन् 1936 में अंबाला मे ट्रस्ट की टिकट को पंजीकृत करवा कर उन्होने दिव्य संघ ट्रस्ट की स्थापना कर दी तथा धीरे–धीरे देश के सभी मुख्य शहरों मे इनकी 300 शखाए खुल गई तथा आध्यात्मिक साहित्य का प्रकाशन एवं निःशुल्क वितरण किया जाने लगा।

धीरे–धीरे संस्था के कार्यो का विस्तार होता रहा अशांत कथा तनावग्रस्त मानव के मन को स्थिर करने हेतु विश्वनाथ मंदिर मे नियमित रूप से तीन समय महामंत्र का अखंड पाठ होने लगा। एलोपैथिक चिकित्सा तो प्रांरम्भ से ही स्वामी जी करते थे किंतु इस संस्था की स्थापना के बाद आयुर्वेदिक औषधियों द्वारा भी मानव सेवा की जाने लगी।

सार रूप मे श्रीमती प्रकाश अग्रवाल के शब्दों मे संस्था के प्रमुख कार्यो का उल्लेख इस प्रकार किया गया हैं– 1945 मे उन्होंने आयुर्वेदिक औषधि निर्माणशाला कितनी स्थापना की। 28 दिसंबर 1945 को स्वामी जी ने अखिल विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया 19 फरवरी 1947 मे उन्होने अखिल विश्व साधु संघ की स्थापना की 1947 में संस्था के कार्यों का विशेष विस्तार हुआ, यह वर्ष हीरक जयंती का वर्ष था। इस वर्ष अनेक भवन बनें। अगले वर्ष सन् 1948 मे अंतेवासी साधकों तथा अभ्यागत साधकों को सुव्यवस्थित आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने लिए योगवेदांत आर्य विद्यापीठ की स्थापना हुई। अध्यात्मिक ज्ञान का व्यापक प्रचार–प्रसार करने के लिए 1951 में योग वेदांत आरण्य अकादमी मुद्रणालय की स्थापना की गई इसी लक्ष्य को समक्ष रखकर स्वामी जी ने 1953 मे वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑफ रिलीन्जस' (विश्व–धर्म–परिषद) का (मुख्यालय में) आयोजन किया। उनके द्वारा स्थापित छोटी सी डिस्पेंसरी क्रमंशः विकसित हुई तथा आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं सहित एक नियमित चिकित्सालय के रूप मे स्थापित हो गई। शिवानंद नेत्र चिकित्सालय औपचारिक रूप मे 1957 में खोला गया, जिसमें रोगियों के लिए 22 शय्याओं की व्यवस्था थी। 1958 में शिवांनद साहित्य शोध संस्थान (शिवानंद लिटरेचर रिसर्च इंस्ट्रीयूट) की स्थापना की गई। श्री स्वामी जी ने सेवा, प्रेम, ध्यान और साक्षात्कार से ज्ञान का अपना संदेश अपनी 300 से भी अधिक पुस्तकों, पत्रिकाओं और पत्र आदि के माध्यम से विश्व के हर कोने तक पहुंचाया है।

9.0 महासमाधि–

14 जुलाई 1963 को इस युग के महापुरूष ने उत्तरायण के अंतिम दिन ऋषिकेश में मुख्यालय स्थिति अपनी कुटिया में महासमाधि ली। 21 जून 1963 को डायमंड जुबली हॉल से प्रातः कालीन सत्संग मे भाग लेकर बाहर आए तथा पास खड़े नीम के पेड़ के निकट आकर रूक गए, भक्तों पर एक अर्थपूर्ण दृष्टि डाली तथा विनोद भरे स्वर में बोले '' ओ जी, ब्रह्मलोक से विमान आ रहा है, कौन–कौन चलेंगा मेरे साथ? ''सचमुच लगभग 3 सप्ताह बाद गुरूदेव को लेने के लिए विमान आया और उनको ले गया।

अंतिम समय में भी उनके अंदर प्रेम और सेवा का भाव जागृत था अंतिम समय में भी अपने शिष्यों के भरण–पोषण का उन्हें पूरा ध्यान था। अपने शिष्यों को भी अपनी संतान के समान प्रेम करते थे, अति करूणा अवस्था में भी उन्हें उनके खाने–पीने और रहने की चिंता रहती थी 14 जुलाई को प्रातः 3ः 30 बजें उन्होंने अपने सेवक से पूछा– ''सब लोग कहाँ है।'' ''बरामदें में सो रहे हैं। ''तुम सब खाना कहां खाते हो? लंगर में। और बाद में कहां खाओगे ? ''लंगर में।'' रोज की तरह लंगर चलता है।'' अंतिम क्षण तक शिष्यों के भरण–पोषण के प्रति इतनी जागरूकता! कितना असाधारण! और उसी रात यानी 14 जुलाई 1963 रात्रि 11ः 15 महा समाधि में लीन हो गए। इस प्रकार भारत की एक महान विभूति ब्रह्ममलीन हो गई। ''उनके अंतिम लिखित शब्द थे– ''रिमेंबर एंड फॉरगेट'' अर्थात भगवान का स्मरण करों और शरीर को भूल जाओं उनका अंतिम संदेश था– ''सेवा, प्रेम, ध्यान और साक्षात्मकार।

इस प्रकार मनमोहक व्यक्तित्व वाले धार्मिक तथा सच्चरित्र रहें, निष्काम एंव निस्वार्थ सेवा वाले ज्ञानियों मे अग्रगण्य उच्च जीवन आदर्शों वाले, सबके प्रति समभाव रखने वाले, घृणा, लालच, उत्तेजना से दूर अत्यंत विनोद प्रिय शांत स्वभाव वाले शील सन्यासी ने मानव मात्र को शाश्वत सुख का मार्ग दिखला कर स्वयं इस नश्वर संसार से विदा ले ली।

स्वामी शिवानन्द का लेखन–कृतियां :–

यदि व्यक्ति के रूप में देखा जाए तो स्वामी शिवानंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे न केवल एक व्यवहार कुशल व्यक्ति थे, एक सफल चिकित्सक थे, एक उच्च कोटि के साधक थे, तत्वज्ञानी योगी अपितु जब लेखनी चलाई तो उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वह एक सफल लेखक भी थे। प्राणी मात्र के कल्याण के लिए लेखन कार्य किया। उन महान योगी ने जीवन को उसकी समग्रता में स्वीकार किया। शरीर मन और आत्मा से मानव के व्यक्तित्व का निर्माण होता है अतः उन्होने इन सब को व्यक्ति के आत्मा उन्नति मे आवश्यक माना और इसीलिए उन्होंने मनुष के आत्मिक, शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक, सामाजिक एवं नैतिक सुधार हेतु प्रत्येक विषय पर अपनी लेखनी चलाई। उनकी विषय गत विविधता देखते ही बनती है और वास्तव मे उनकी असाधारण प्रतिभा का प्रतीक है। एक और उन्होंने योग के सभी पक्षों पर लिखा। चाहे वह ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, हठयोग, मंत्रयोग, तंत्रयोग कुंडलिनी योग अथवा जपयोग या लययोग ही क्यों ना हो ,दूसरी और समस्त योगों का सार जिसे वे समन्वय योग कहते थे, साधकों के लिए प्रस्तुत किया, जिससे उनके गहरे ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है। विषय की दृष्टि से भी उन्होंने अनेक विषयों पर पुस्तकें लिखी। स्वास्थ्य, धर्म, योग, दर्शन, वेदांत, तत्व ज्ञान, स्वाध्याय, शिक्षा, आत्मोन्नति, विज्ञान, कला हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई इसके अतिरिक्त उनकी कविताओं, वार्ताओं तथा भाषणों के संकलन भी मिलते हैं। उनका लेखन कार्य अंतिम दिनों तक चलता रहा। अंत तक भी उन्होंने अपनी लेखनी को विराम नहीं दिया और यही कारण है कि उनकी लेखनी से 300 से अधिक पुस्तकें लिखी गई।

श्रीमती प्रकाश अग्रवाल के शब्दों मे उनकी अमर लेखनी से निःसृत रचनाएं आध्यात्मिक सलिल से निकले मंत्र ''भूतों न भविष्यति'' की तरह है, जिनका एकमात्र लक्ष्य अविद्या, माया, अज्ञान, अंधकार, निराशावादिता, नास्तिकता तथा अधर्म का विनाश करना है।

आध्यात्म के क्षेत्र में स्वामी का योगदान अविस्मरणीय है। उनके द्वारा अनेक विषयों पर लिखी गई लगभग 300 पुस्तकें है जो मूल रूप से अंग्रेजी में लिखी गई थी परंतु बाद में न सिर्फ भारत की अनेक भाषाओं में ही नहीं बल्कि अब तो विश्व की अनेक भाषाओं में उनका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। इस महान संत की कुछ कृतियां निम्नलिखित है–

1. Meditation on Om
2. Bhagwad Gita
3. Raja Yoga
4. Practice of Yoga
5. Mind – its Mysteries and Control
6. Voice of the Himalayas
7. Light Divine
8. Light on Yoga – Sadhna
9. Siva's Treasure
10. Siva's Teachings A to Z
11. So Says Sivananda
12. Divine Treasure

13. ओ३म प्रणव–रहस्य
14. गीता–निदिध्यासन
15. वेदान्त–प्रदीप
16. श्रीमद्भागवद्गीता
17. कर्मयोग–साधन
18. भक्तियोग–साधन
19. राजयोग
20. ध्यानयोग–रहस्य
21. प्राणयाम–साधना
22. प्राणायाम और अनन्त शक्ति
23. दैनिक जीवन में योग
24. शिवानन्द योग–वेदान्त–सूत्र (दो–भाग)
25. शिवानन्द–योगत्रयी
26. वैराग्य के पथ पर
27. जपयोग
28. ध्यानयोग
29. योगाभ्यास का मूलाधार
30. अमृत–गीता
31. योग–साधना
32. साधन–मार्ग
33. मन–रहस्य और निग्रह
34. मनोजय
35. शिवानन्द–आत्मकथा

10.0 सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. स्वामी ज्योतिर्मय आनंद सरस्वती, शिवानन्द आत्मकथा, पृष्ठ 34, द डिवाइन लाइफ सोसायटी उत्तराखण्ड भारत।
2. स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती, शिवानन्द आत्मकथा, पृष्ठ 36
3. श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, ''श्री स्वामी जीवन झांकी'' स्वामी शिवानंद जन्म शताब्दी स्मृति ग्रथ, पृष्ठ 21,
4. श्री स्वामी ज्योतिर्मय आनंद सरस्वती शिवानन्द आत्मकथा, पृष्ठ 36, द डिवाइन लाइफ सोसायटी उत्तराखण्ड भारत।
5. श्री स्वामी ज्योतिर्मय आनंद सरस्वती, शिवानन्द आत्मकथा, पृष्ठ 37, द डिवाइन लाइफ सोसायटी ऑफ इडिया उत्तराखण्ड भारत।

6. श्री स्वामी ज्योतिर्मय आनंद सरस्वती, शिवानन्द आत्मकथा, पृष्ठ 37, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, गढ़वाल, उत्तराखण्ड।
7. श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, स्वामी जन्म शताब्दी स्मृति ग्रथ, पृष्ठ 21, श्री स्वामी कृष्णानंद प्रथम संस्करण 1987 मुद्रा विज्ञान प्रश्न ऋशिकेश शिवानंद प्रकाशन।
8. डिवाइन लाइफ सोसायटी, ऋशिकेश उत्तराखण्ड।
9. श्री स्वामी जयोतिर्मयानंद सरस्वती, शिवानन्द आत्मकथा, पृष्ठ 38, 39, 40, डिवाइस लाइफ सोसाइटी उत्तराखण्ड।
10. स्वामी जयोतिर्मयानंद, साधना, पृष्ठ 36, द डिवाइन लाइफ सोसायटी उत्तराखण्ड।
11. श्रीमती प्रकाश अग्रवाल,स्वामी शिवानंद जन्म शताब्दी स्मृति ग्रंथ, पृष्ठ 22
12. श्री स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती, शिवानंद आत्मकथा, पृष्ठ 43, प्रकाशक डिवाइन लाइफ सोसायटी उत्तराखण्ड।
13. श्री स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती, शिवानंद आत्मकथा, पृष्ठ 42, द डिवाइन लाइफ सोसयअी उत्तराखण्ड।
14. स्वामी श्री ज्योतिर्मयानंद सरस्वती, शिवानंद आत्मकथा, पृष्ठ 49 ।
15. स्वामी शिवानंद, शिवानंद आत्मकथा, पृष्ठ 44–45
16. श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, स्वामी शिवानंद जन्मषताब्दी स्मृति ग्रंथ, पृष्ठ 23
17. स्वामी शिवानंद सरस्वती, शिवानंद– आत्मकथा, पृष्ठ 50
18. श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, स्वामी शिवानंद जन्म शताब्दी स्मृति, पृष्ठ 23
19. श्री स्वामी ज्योतिर्मयानंद, साधना, पृष्ठ 37, द डिवाइन लाइफ सासायटी उत्तराखण्ड।
20. श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, स्वामी शिवानंद जन्मषताब्दी स्मृति ग्रंथ पृष्ठ 23 ।
21. स्वामी जयोतिर्मयानंद सरस्वती, शिवानंद आत्मकथा पृष्ठ 50 ।
22. स्वामी श्री ज्योतिर्मयानांद सरस्वती, शिवानंद आत्मकथा पृष्ठ 65 ।
23. श्री स्वामी रामराज्यम, स्वामी शिवानद जन्मशताब्दी स्मृति ग्रंथ, पृष्ठ 36,
24. स्वामी शिवानंद जन्म शताब्दी स्मृति ग्रंथ पृष्ठ 35
25. श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, स्वामी शिवानंद जन्म शताब्दी स्मृति ग्रंथ, पृष्ठ 32